आमलकी एकादशी — चयनित पूर्ण कथा का पुनर्कथन

Amalaki Ekadashi Katha — Complete Selected Chapter Retelling

Source: Sanskrit Wikisource contributors — complete chapter 45, controlling revision 336426. Also compared: Wikisource revision API — complete controlling wikitext; Creative Commons Attribution–ShareAlike 4.0 — adaptation licence; Wisdomlib Sanskrit chapter 45 — full electronic comparison; Wisdomlib / N. A. Deshpande chapter 45 — whole English comparison only; prose not copied; Wikisource rightsinfo — site-wide CC BY-SA 4.0 reuse basis.

Valkala's own retelling of the katha in Padma Purana, Uttara Khanda 6.45.1–63, Sanskrit Wikisource revision 336426, not a transcription of the original text.

आमलकी का प्रश्न और सृष्टि-कथा

KATHA 6.45.1–14

प्रारम्भिक प्रश्न में विजया की महिमा सुनने के बाद कृष्ण से फाल्गुन शुक्ल पक्ष के व्रत का नाम पूछा जाता है। चयनित संस्कृत प्रश्न और उत्तर दोनों को श्रीकृष्ण उवाच कहता है; अंग्रेज़ी तुलना भी प्रश्न का वही शीर्षक रखती, लेकिन टिप्पणी में युधिष्ठिर सुझाती है। यहाँ प्रश्न को चुपचाप सुधारा नहीं गया। कृष्ण धर्मपुत्र को वह चर्चा सुनाते हैं जो वसिष्ठ ने मान्धाता के पूछने पर कही थी। आमलकी व्रत विष्णुलोक देने वाला और वृक्ष के नीचे रात्रि-जागरण हजार गायों के दान जैसा फल देने वाला कहा गया है।

मान्धाता पूछते हैं कि आमलकी कब उत्पन्न हुई, क्यों पवित्र और पाप-नाशक है तथा जागरण का ऐसा फल क्यों है। वसिष्ठ वृक्ष की उत्पत्ति बताते हैं: सब एक समुद्र होने पर स्थावर-जंगम, देव-असुर, नाग और राक्षस नष्ट हुए थे। सनातन परमात्मा अपने अक्षय परम ब्रह्म पद में गए। जाग्रत ब्रह्ममुख से चन्द्र-जैसी चमक वाली थूक की बूँद भूमि पर गिरी।

उस बूँद से अनेक शाखा-प्रशाखाओं और फलभार से झुका बड़ा धात्री वृक्ष उत्पन्न हुआ, सभी वृक्षों का पहला अंकुर कहा गया। फिर ब्रह्मा ने देव, दानव, गन्धर्व, यक्ष, राक्षस, पन्नग और निर्मल महर्षियों सहित जीवों की सृष्टि की। हरि-प्रिय धात्री के पास आकर देव विस्मित हुए। यह पुराणिक सृष्टि-कथा है, वृक्षों के वैज्ञानिक इतिहास, थूक-प्रयोग या आँवले के औषधीय लाभ का दावा नहीं।

The opening question asks Krishna the name of Phalguna's bright-fortnight vow after hearing Vijaya's greatness. The selected Sanskrit labels both question and answer Shrikrishna uvacha; the English comparison retains that question heading but suggests Yudhishthira in a footnote. The question is not silently repaired. Krishna tells Dharmaputra the discussion Vashishtha gave when Mandhata asked him. Amalaki is praised as leading to Vishnu's world, with a night vigil beneath the tree equated to the merit of giving a thousand cows.

Mandhata asks when Amalaki arose, why it is pure and removes sin, and why a vigil has that reward. Vashishtha describes its origin: when everything became one ocean, stationary and moving beings, gods and asuras, serpents and rakshasas perished. The eternal supreme self went to its imperishable supreme Brahman state. A moon-bright drop of spittle from the awakened Brahma-mouth fell to earth.

From the drop came a large dhatri tree with many branches and twigs bent under fruit, described as the first shoot of all trees. Brahma then created beings including gods, danavas, Gandharvas, yakshas, rakshasas, pannagas and pure great sages. Gods approached the dhatri dear to Hari in wonder. This is Puranic creation narrative, not scientific botanical history, advice to use spittle or a medicinal claim about amla.

दैवी वाणी, वृक्ष में देवता और व्रत का निवेदन

KATHA 6.45.15–32

देव सोचते हैं कि यह कौन-सा वृक्ष है। अशरीरी वाणी इसे श्रेष्ठ वैष्णव आमलकी बताती है। स्मरण से गोदान का फल, स्पर्श से दुगुना और धारण से तिगुना पुण्य कहा जाता है। आमलकी की सेवा और पाप-नाश की प्रशंसा के साथ वृक्ष में देवताओं का धार्मिक मानचित्र है: मूल में विष्णु, उसके ऊपर पितामह ब्रह्मा, तने में रुद्र, शाखाओं में मुनि, प्रशाखाओं तथा पत्तों में देव, फूलों में मरुत और फलों में प्रजापति। धात्री को

सर्वदेवमयी और विष्णुभक्तों के लिए पूज्य कहा जाता है।

ऋषि वाणी से पूछते हैं कि वे कौन हैं, किस कारण से प्रकट हुए, देव हैं या कोई और। वाणी अपने को सभी जीवों और लोकों का सृष्टिकर्ता सनातन विष्णु बताती है। ब्रह्मा के पुत्र अनादि-अनन्त देव की स्तुति करते हैं: भूतों के आत्मा, आत्मा, परमात्मा, अच्युत, अनन्त, दामोदर, कवि और यज्ञेश को प्रणाम का आशय है। प्रसन्न हरि पूछते हैं कि उनकी कौन-सी इच्छा पूरी करें।

ऋषि कम प्रयत्न और अधिक फल वाला श्रेष्ठ व्रत पूछते हैं, जो स्वर्ग, मोक्ष, धन, धान्य, पुण्य, संतोष और विष्णुलोक का सम्मान दे। विष्णु फाल्गुन शुक्ल द्वादशी का पुष्य से संयोग कहते हैं। आमलकी के पास जागरण, पाप-मुक्ति, हजार गायों के दान जैसा फल और अच्युत की पूजा से विष्णुलोक से न हटने की प्रशंसा है।

यहाँ द्वादशी-पुष्य का विशेष पद एकादशी शीर्षक के साथ मौजूद है; उसे चुपचाप एकादशी नहीं बनाया गया और उससे वर्तमान वर्ष की तिथि या नक्षत्र नहीं निकाला गया। देवताओं का वृक्ष-मानचित्र, पुण्य के अनुपात और फल-वचन धार्मिक दृष्टि हैं, वनस्पति-विज्ञान या निश्चित लाभ नहीं। वृक्ष को काटना, छीलना, अनिवार्य धारण, पशुदान या जागरण अपेक्षित नहीं।

The gods wonder what tree this is. A bodiless voice identifies it as the excellent Vaishnava Amalaki. Remembering it is equated to cow-giving merit, touching to twice that merit and bearing it to three times. Praise of serving Amalaki and removing sin accompanies a religious mapping: Vishnu at the root, Brahma the grandsire above it, Rudra in the trunk, sages in branches, deities in twigs and leaves, Maruts in flowers and lords of beings in fruit. Dhatri is described as embodying all gods and worthy of Vishnu devotees' reverence.

Sages ask the voice its identity, why it has appeared, and whether it is a deity or someone else. It identifies itself as eternal Vishnu, creator of all beings and worlds. Brahma's sons praise the beginningless, endless deity; their salutation addresses the self of beings, self, supreme self, Achyuta, Ananta, Damodara, the seer and lord of sacrifice. Pleased, Hari asks what they desire.

They request the best vow with little exertion and abundant fruit: heaven, liberation, wealth, grain, merit, satisfaction and honour in Vishnu's world. Vishnu mentions Phalguna's bright Dwadashi joined with Pushya. A vigil near Amalaki is praised for release from sin and merit like giving a thousand cows; worship of Achyuta is said to prevent falling from Vishnu's world.

The Dwadashi–Pushya qualification coexists with the Ekadashi title; it is not silently changed to Ekadashi or used to calculate a current year's date or nakshatra. The deity mapping, merit ratios and benefits are religious perspectives, not botany or guaranteed rewards. Cutting or stripping trees, compulsory wearing, animal gifts or vigils are not expected.

पूरी तैयारी और स्नान-पूजा का वर्णन

KATHA 6.45.33–48

ऋषि व्रत की पूर्णता, मंत्र, नमस्कार, देवता, दान, स्नान, पूजा और अर्घ्य का विधान पूछते हैं। विष्णु

एकादशी पर निराहार रहने और अगले दिन भोजन का संकल्प, कमलनयन अच्युत से शरण तथा दन्तधावन का प्रसंग कहते हैं। अंग्रेज़ी तुलना की दोनों दिन निराहार रहने वाली भाषा यहाँ संस्कृत के अगले दिन भोजन को नहीं बदलती। पाठ पतित, चोर, पाखण्डी, दुराचारी, मर्यादा तोड़ने वाले और गुरु की पत्नी पर अत्याचार करने वाले से बातचीत न करने को भी कहता है। यह पुरानी सामाजिक तथा आचरण-भाषा है; जाति या मत से बहिष्कार का नियम नहीं। अत्याचार का उत्तरदायित्व रहता है।

अपराह्ण में नदी, तड़ाग, कुएँ या घर पर स्नान और पहले मिट्टी लगाने का वर्णन है। पृथ्वी-प्रार्थना घोड़े, रथ और विष्णु से स्पर्शित वसुंधरा से अपने दुष्कर्म की शांति माँगती है। जल-प्रार्थना जल को जीवों का जीवन और शरीर-रक्षक कहती, स्वेदज तथा उद्भिज्ज और रसों के अधिपति को प्रणाम करती और स्नान को तीर्थ, ह्रद, प्रस्रवण, नदी तथा जलाशय के स्नान जैसा स्वीकारने का भाव रखती है। ये प्रार्थनाओं के पूरे आशय हैं, अलग अनिवार्य सूत्र, मिट्टी लगाने या जल में उतरने के निर्देश नहीं।

स्वर्ण जामदग्न्य मुनि का रूप बनाने में माषक और तदर्द्धार्द्धेन का पद है: उसके आधे का आधा, जबकि अंग्रेज़ी तुलना आधा कहती है। कोई आधुनिक वजन, लागत या खरीद-मात्रा नहीं निकाली गई। घर में पूजा-होम और सामग्री सहित आमलकी के पास जाकर आसपास साफ करने का वर्णन आता है।

बिना दरार वाला कलश, पाँच रत्न, सुगन्ध, छाता, जोड़ी पादुका, सफेद चन्दन, गले में माला, धूप और चारों ओर दीपमाला कही गई है। ऊपर लाजा से भरा पात्र और उसके ऊपर जामदग्न्य का रूप आता है। पूरा चयनित विवरण रखा है, पर रत्न, स्वर्ण या सामग्री खरीदना, आग-धुआँ करना, उपवास, सामाजिक अलगाव या जोखिमपूर्ण स्नान अपेक्षित नहीं। भोजन, पानी, सुरक्षित विश्राम और देखभाल जारी रहें।

The sages ask how the vow is completed: formulas, salutations, deity, giving, bathing, worship and arghya. Vishnu describes no food on Ekadashi and a resolve to eat the next day, refuge in lotus-eyed Achyuta and cleaning the teeth. The English comparison's wording about no food on both days does not replace Sanskrit's next-day eating. The text also discourages conversation with those it calls fallen, thieves, heretics, ill-conducted, boundary-breakers and violators of a teacher's wife. This is old social and conduct language, not a rule for exclusion by caste or belief. Responsibility for abuse remains.

Afternoon bathing in a river, tank, well or at home, preceded by applying earth, is described. The earth prayer addresses ground trodden by horses, chariots and Vishnu, asking release from one's wrongdoing. The water prayer calls water the life of beings and protector of bodies, salutes the lord of moisture-born and sprouting beings and fluids, and asks that the bath count as bathing at holy places, lakes, springs, rivers and reservoirs. These are the prayers' full intentions, not detached compulsory formulas or instructions to apply earth or enter water.

The golden Jamadagnya sage image involves mashaka and tadardhardhena: half of its half, whereas the English comparison says half. No modern weight, cost or purchasing quantity is derived. Worship and homa at home precede approaching Amalaki with requisites and cleaning the surrounding area.

An undamaged pitcher, five gems, fragrances, an umbrella, paired footwear, white sandal, a garland at its neck, incense and surrounding rows of lamps are described. A vessel filled with laja sits above, with

Jamadagnya's image upon it. The whole selected description remains, but buying gems, gold or materials, fire or smoke, fasting, social isolation or risky bathing is not expected. Food, water, safe rest and care continue.

अंगों के नाम, अर्घ्य और समापन की विधि-चर्चा

KATHA 6.45.49–59

देव-रूप के अंगों और नामों का पूरा सम्बन्ध वर्णित है: चरण–विशोक, घुटने–विश्वरूपिन्, जाँघें–उग्र, कटि–दामोदर, उदर–पद्मनाभ, वक्ष–श्रीवत्सधारिन्, बायीं बाँह–चक्रिन् और दायीं–गदिन्। आगे कण्ठ–वैकुण्ठ, मुख–यज्ञमुख, नासिका–विशोकनिधि, आँखें–वासुदेव, ललाट–वामन, भौंहें–राम और सिर–सर्वात्मन् हैं। यह मूर्ति-पूजा का ऐतिहासिक स्रोत-मानचित्र है, शरीर पर अनिवार्य स्पर्श, न्यास या उपचार की अलग विधि नहीं।

भक्तिपूर्वक शुभ्र फल सहित अर्घ्य, नृत्य, गीत, वाद्य, धर्म-कथा और स्तुति से जागरण तथा रात भर वैष्णव आख्यानों का वर्णन है। विष्णु-नामों सहित धात्री की प्रदक्षिणा में 108 या 28 संख्या आती है। संस्कृत में प्रदक्षिणा के बाद यह संख्या है; अंग्रेज़ी तुलना इसे नाम-दोहराने की संख्या कहती है। किसी एक को बिना बताए सार्वभौमिक जाप या चलने का नियम नहीं बनाया गया।

प्रातः हरि का नीराजन और ब्राह्मण-सम्मान करके जामदग्न्य रूप, घट, दो वस्त्र और पादुका सहित सब देने का प्रसंग है। जामदग्न्य रूप में केशव प्रसन्न हों, ऐसा आशय रखा गया है। आमलकी का स्पर्श और प्रदक्षिणा, स्नान, ब्राह्मणों को भोजन तथा फिर कुटुम्ब सहित अपना भोजन कहा गया है। कुटुम्ब को अंग्रेज़ी तुलना के fraternity से बदलकर अलग समुदाय नहीं बनाया गया।

ये चयनित अध्याय के पूर्ण क्रम हैं, अनिवार्य खर्च, दान, जाति-आधारित पात्रता या रात्रि-जागरण की चेकलिस्ट नहीं। वृक्ष को नुकसान न पहुँचाएँ, नदी या कुएँ में प्रवेश न करें और भोजन-पानी या नींद न रोकें। दीपक प्रयोग हो तो निगरानी और सोने से पहले बुझाना आवश्यक सुरक्षा है।

The whole mapping of the deity-image's parts to names is narrated: feet–Vishoka, knees–Vishvarupin, thighs–Ugra, waist–Damodara, belly–Padmanabha, chest–Shrivatsadharin, left arm–Chakrin and right arm–Gadin. It continues with neck–Vaikuntha, mouth–Yajnamukha, nose–Vishokanidhi, eyes–Vasudeva, forehead–Vamana, eyebrows–Rama and head–Sarvatman. This historical image-worship mapping is not a separate procedure requiring bodily touch, nyasa or treatment.

Devoted arghya with a white fruit, vigil with dance, song, instruments, religious accounts and praise, and Vaishnava accounts through the night are described. Circumambulation of dhatri with Vishnu's names carries the number 108 or 28. Sanskrit puts the number after circumambulation; the English comparison assigns it to repeating names. Neither is silently made a universal chanting or walking rule.

Morning nirajana of Hari and honouring a Brahmin precede giving everything, including Jamadagnya's image, pitcher, two garments and footwear. The intention asks Keshava in Jamadagnya form to be pleased. Touching and circling Amalaki, bathing, feeding Brahmins and then eating with one's family follow. Sanskrit kutumba is not replaced with the English comparison's fraternity to invent a separate community.

These are the complete selected chapter's sequence, not a checklist of compulsory spending, gifts, caste eligibility or night vigils. Do not damage trees, enter rivers or wells, or withhold food, water or sleep. If using a lamp, attendance and extinguishing before sleep are essential safety precautions.

पूरा फल-वचन और मान्धाता को अंतिम उपदेश

KATHA 6.45.60–63

विष्णु इस रीति के पुण्य का पूरा वर्णन कहते हैं: सभी तीर्थों का पुण्य, सभी दानों का फल और सभी यज्ञों से अधिक फल मिलने की धार्मिक प्रशंसा है। इसे व्रतों का श्रेष्ठ व्रत कहकर पूरा कथन समाप्त करते हैं। फिर देवेश वहीं अदृश्य हो जाते हैं और सभी ऋषि पूरा वर्णित आचरण करते हैं।

बाहरी उपदेश राजा को उसी तरह यह दुराधर्ष और सभी पापों से मुक्त करने वाला कहा गया व्रत करने का आग्रह करता है। प्रारम्भ में अल्पायास की प्रशंसा और अन्त का दुराधर्ष पद दोनों रखे हैं; विरोध को नया साधारण नियम बनाकर नहीं सुधारा गया। यह पूर्ण फल-वचन स्वास्थ्य, संपत्ति या परलोक की गारंटी और गलत कर्मों की जिम्मेदारी हटाने वाला नहीं।

अलग समापन अध्याय 45 को पद्म महापुराण की पचपन हजार वाली संहिता, उत्तर खंड के उमापति–नारद संवाद का फाल्गुन शुक्ल आमलकी एकादशी कहता है। कृष्ण का बाहरी उत्तर, मान्धाता–वसिष्ठ तथा ऋषि–विष्णु के भीतर के संवाद सहित 1–63 की सभी क्रमांकित इकाइयाँ और समापन इस मूल संक्षिप्त हिन्दी गद्य में पूरे हैं। संख्या-जाँच का पुराना ध्वज कोई गायब श्लोक सिद्ध नहीं करता; कोई अतिरिक्त पद नहीं बनाया गया।

यह आमलकी की उत्पत्ति और पूर्ण शिक्षण का चयनित पुनर्कथन है, चित्रसेन या शिकारी-पुनर्जन्म कथा का मिश्रण, संस्कृत प्रतिलेख, औषधीय आँवला-लेख या औपचारिक पूजा-पुस्तिका नहीं। स्थान और वर्ष सहित उत्सव-तिथि जुड़े पृष्ठ पर है; यहाँ नई द्वादशी, पुष्य, पारण या घड़ी का समय नहीं निकाला गया।

Vishnu completes the merit account: praise equates the vow with merit at all holy places, the fruit of all gifts and rewards exceeding all sacrifices. He concludes by calling it the best of vows. The lord then disappears there, and all the sages perform the described observance completely.

The outer instruction urges the king to observe likewise this vow called duradharsha and freeing one from all sins. Both the initial praise of little exertion and the closing duradharsha wording remain; the tension is not repaired into a new simple rule. These complete religious benefits guarantee neither health, wealth nor afterlife outcomes, and do not remove responsibility for wrongdoing.

The separate colophon identifies chapter 45 as Phalguna's bright Amalaki Ekadashi in the Umapati–Narada dialogue of the Padma Mahapurana's fifty-five-thousand collection, Uttara Khanda. All numbered units 1–63 and the ending, including Krishna's outer answer and the inner Mandhata–Vashishtha and sages–Vishnu dialogues, are covered in original condensed Hindi prose. The old numbering-extraction flag does not establish a missing verse; no extra unit is invented.

This selected retelling covers Amalaki's origin and complete teaching, not a blend with a Chitrasena or hunter-rebirth story, Sanskrit transcription, medicinal amla article or formal worship manual. The linked hub owns the year-and-place-scoped festival date; no new Dwadashi, Pushya, parana or clock time is calculated here.

Source licence notice (it travels with every copy of this text):

Amalaki Ekadashi Katha — adapted from Sanskrit Wikisource contributors, Padma Purana 6.45.1–63, revision 336426, linked in Sources. Electronic source: CC BY-SA 4.0, https://creativecommons.org/licenses/by-sa/4.0/ . Changes: original condensed Hindi prose, full Roman-Hindi and English renditions, summaries and contextual notices by Valkala Editorial (2026). These adaptations are distributed under CC BY-SA 4.0. No source endorsement implied. This licence covers the retelling and its language layers, not unrelated code or site content. No modern Wisdomlib translation is included.
Copyright 2026 Valkala Editorial (original adaptations); shared under CC BY-SA 4.0. Attribution remains Sanskrit Wikisource contributors.